स्वर

"स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण को स्वर कहते हैं।"

इनकी संख्या
⇓

- कुल संख्या – 13
- स्वर की संख्या – 11
- मूल स्वर – 4 (अ, इ, उ, ऋ)

Note मात्रा के आधार पर स्वर की संख्या → लघु मात्रा (छोटी मात्रा)
→ गुरु मात्रा (बड़ी मात्रा)

मात्रा

⇒ स्वर की मात्रा :- व्यंजनो के विभिन्न प्रकार के उच्चारणों को स्पष्ट करने के लिए जब व्यंजन के साथ स्वर का योग करते हैं, तो स्वर अपने मूल रूप में न आकर जिस रूप में आता है, उस रूप को स्वर की मात्रा कहते हैं।

जैसे —

वर्ण – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

मात्रा – ◌, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै

→ क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै

ो, ौ, ं/ँ, ः

→ को, कौ, कं, कः

ं → अनुस्वार
ँ → चंद्रबिन्दु
ः → विसर्ग

Note :-

ए - जिस पर कोई मात्रा नहीं उसपर एक (े) मात्रा.

ऐ - जिस पर एक मात्रा (े) उसपर दो (ै) मात्रा.

याद रहे :- १) ा, ी, ो, ौ, ा: मात्राएँ वर्ण के पीछे लगती है।

जैसे - राधा, नीलम, सोनम, गौरी, अत: आदि।

२) ि मात्रा वर्ण के पहले लगती है।

जैसे - निधि, सिरा, किसका आदि।

३) ु, ू, ृ मात्राएँ वर्ण के नीचे लगती हैं।

जैसे - कुसुम, दीपू, कृषि, आदि।

४). े, ै, ँ मात्राएँ वर्ण के ऊपर लगती है।

जैसे - देर, सैर, चाँद आदि।

५) जब किसी शब्द की शुरूआत स्वर से हो तो वह अपने वास्तविक रूप में आता है।

जैसे - आम, इमली, एहसास

६) जब किसी शब्द में किसी व्यंजन के साथ दो स्वर जुड़ते हैं तो पहला स्वर मात्रा के रूप में तथा दूसरा स्वर अपने वास्तविक रूप में आता है।

जैसे -

शुरूआत शुरूआत

1

(र् उ) आ त्

शुरुआत

↓

श् उ र् उ आ त् अ

↓ ↓

शु रु आ त

→ वास्तविक रूप

इसे समझने के बाद संधि को समझना आसान होता है।

जैसे – अत्यधिक

⇓

अति + अधिक

↓

अत् + इ + अ + धिक

य्

अत् + य् + अ + धिक

⇓

अत्यधिक